

स्पन्दन

भास कोंकणी आवसु आमची। लिपि देवनागरी उडगासु दवराची।।

Date of Publication : 1st of every month

OCTOBER 2013



केरळ कोंकणी अकादमी

कोच्ची

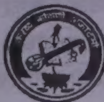
पंद्रा रुपया

विशेष अंक

स्पन्दन

प्रकाशन : केरळ कोंकणी अकादमी, कोच्ची

SPANDAN



Published by :
KERALA KONKANI ACADEMY
8/28, 'Santhery', 1st Floor,
Opp. M.S.C. Bank Ltd., Cherlai Road,
Cochin - 682 002. Mobile : 94477 35849
Email : keralakonkaniacademy@gmail.com

खंड : 2 | अंक : 10 | 1935 आश्विन

मुखचित्र : गोपी-कृष्णा नृत्य, केरळचे म्युरल रीतीचे एक सुन्दर वर्णचित्र। एरणाकुळम अजीष के. पैयालि सृष्टी। के.आर. कमलाकान्त पै अनि गीता बाई हांगेलो सुपुत्र।



लेखनान्तुली मतां त्या त्या बरोवप्याचीं

प्रति - ₹ 5/-
वार्षीक - ₹ 60/-

संपादकीय 

केन्द्र साहित्य अकादमी प्रतिवर्ष चार प्रधान पुरस्कार दीवनु एत्तायि। कोंकणी लगेन मेळनु 24 भाषेचे कृतियां तीं वेंचूनु काडताति। मुख्य पुरस्कार (एक लक्षु रुपया), भाषान्तर पुरस्कार (पन्नास सासु रुपया), युवा पुरस्कार (पन्नास सासु रुपया), बाल साहित्य पुरस्कार (पन्नास सासु रुपया)।

कोंकणी पुरस्कार गोवेतर राज्यान्तु मेळचे ऊणे जावनु दिकूक एत्ता। कारण इत्तें म्हणु चिन्तन कोर्का जालोलो विषयु। गोवेतर राज्यान्तु बरोवपी ऊणे-वें ? पुस्तक छापूचे ऊणे वें ? जाव्यात। पुस्तक धाडून दिंव्याक अस्सिली रीती, वेळु कळना वे ? जाव्यात। खंय चुकता म्हणु समजूचे आसा। आजी फुडेचा पसि चड संविधान कोंकणी विषयान्तु आसा। पुस्तकां छापूक जाल्यारीयि ते बिक्रि करूक जाल्यारीयि गोवा कोंकणी अकादमी, विश्व कोंकणी केन्द्र इत्यादी मुक्कारि एत्ताय। केरळान्तुले बरोवप्यांक जांवका जालेले निर्देशन दीवनु, वेळारि साहित्य अकादमी कडे पुस्तक पावोंवचाक तांगेले व्यवस्था बरोप्यांक जाणोंवचाक असीले संविधान केरळचे संस्थेन केल्यार चड चड पुस्तक छापून पावोवयात म्हुण आमका दिस्ता। तेचि वरी निर्णायक समितीनय आपण्याले गोवेतर भांवडाकय ह्यो पुरस्कार मेळचे तसी आसीलो मनोधर्म दवरल्यार चांग आसीलें।

कोंकणी बरोवपी चड चड जावो, भास विकसित जावो असी आमची आशा।

कोच्ची, 01-10-2013 सुरेश ए. शेणै, मुखेल संपादक.

DD 9 (चन्दना) 25-8-2013 - जी. कविता कम्मत, मैसूर, 31-08-2013 - सम्पदा भट्ट, अनुपमा धारेश्वर, 14-9-2013- एम. एस. कामत 22-9-2013 - संगीता एस. भटकळ हांगेले कोंकणी गीन्त अस्सिले। 8-9-2013 - लियो लोबो अनि संगातीगेंले कार्यक्रम।

2013 साहित्य अकादमी पुरस्कार - कोंकणी विभागान्तु :
युवा पुरस्कार - योगिनी बोरकार **"मत्तियेंतले गन्ध"** (कविता),
बाल साहित्य पुरस्कार : माया अनिल खरांगटे - **"रानांच्या मनांत"** (नवलिका)।

युवा पुरस्कार 2014 बगेक साहित्य अकादमी बरोवपी अनि प्रकाशका लगि पुस्तक पेटोन्नु दिंव्चाक अपेक्षा करता। पुरस्कार राशि - Rs. 50,000/-. प्राय 35 अनि तज्जे खाल। पुस्तका लगि जन्म तिथि प्रमाण पत्र लगेन पेटोन्नु दींव्का। अंतिम तरीक 15 अक्तूबर 2013। पेटोन्नु दींव्का जलेल्यो पत्तो - Officer in charge, Sahitya Akademi, 172, Mumbai Marathi Granth, Sangrahalaya Marg, Sharada Cinema Bldg., Dadar (East), Mumbai - 400 014. Phone : 022-24135744, 24131948
(तंगेले Website चोय्यायि अनि सम्पर्क करायि)

विश्व कोंकणी साहित्य अकादमी 2010 वर्ष धोर्नु दोनि पुरस्कार - Vimala V. Pai Best Konkani Literary Work Award, अनि Vimala V. Pai Vishwa Konkani Life time Achievement Award - दीव्नु एत्तायि। पुरस्कार राशि एक लक्षु रुपया। औन्दु थकूनु Vimala V. Pai Vishwa Konkani Kavitha Kirti Award लगेन दिंव्चाक वत्ताति खंय। पुरस्कार राशि एक लक्षु रुपया।

2010 - 31-12-2012 ये तीन वर्षान्तु प्रकाशित साहित्य वा कविता कृति पुरस्काराक जाव्नु शिपार्शा सहित 3 प्रति (Copies) पेटोन्नु दिव्यात। पत्तो - Konkani Bhas ani Samskriti Prathistan, Vishwa Konkani Kendra, Konkani Gaon, Shakthi Nagar, Mangalore - 575 016 अंतिम तारिक - 15-10-2013

02-09-2013 - टी. वी. रमण पै हाळ, मंगळूर : विश्व कोंकणी विद्यार्थी स्कोळरषिप 596 एंजिनीयरिंग अनि 28 एम.बी.बी.एस. विद्यार्थीयांक वितरण केल्लें। विश्व कोंकणी केन्द्रान विश्व कोंकणी विद्या वेतन निधि (VKSSF) न्तु थकूनु त 2.5 कोडि रुपया वितरण केल्लेले। आर. वी. देशवाण्डे (State Minister for Higher Education) उद्घाटन कोर्नु वितरण केल्लेले ह्ये वेदीर टी.वी. मोहनदास पै, रामदास कम्मत यू, जे. आर. लोबो (Mangalore South MLA) बस्ती वामन शेणै अनि अप्पण्णा कम्मत उपस्थित अस्सिले।

मनाचें पाळ -२

कृष्ण नारायण नायक, कोच्ची

"राधाकृष्णा गोपालकृष्णा"

भुर्ग्यांलो यो नामघोषु अनियेक फन्ता गुंजता। अशि वर्षाक उतुले फन्ता। जन्माष्टमि जत्तरि महानवमि कार्तिक मास एकदशि माध्वनवमि श्रीरामनवमि सदुगुरु पुण्य तिथि.... आशि जायते विशेष दिनाचरण कार्यक्रमाचों भागु। नगर संकीर्तन! मुकारि लुगटा मकरतोरण। ताका लागून वीराचे बारीचे कुटक्यांरि चीना कागत थापिल्लिं वर्ण कोडियो धोर्नु चेर्डुवांली फांथियो। "राधाकृष्णा, गोपालकृष्णा, नन्दकुमारा, नवनितचोरा...." निष्कळंक निरन्तर नामोचारण। लीन मनान घटि उत्साहान निर्मल भक्तीन निष्काम भावान जयजयारव। हृदयंगम आत्म स्पन्दन। म्हालगड्यालें रागताळ श्रुतियुक्त स्पूर्तीन संकीर्तन स्थानान स्तरान मागल्यान।

नवनीत कृष्ण नटवरकृष्ण देवकीकृष्ण अनन्तकृष्ण श्रावणकृष्ण यदुकृष्ण अतुलकृष्ण बालकृष्ण रामकृष्ण.... सुदीर्घ कृष्ण नामावलि। कृष्णतुळसि कृष्णमणि कृष्णमृग कृष्णपक्ष कृष्णाश्रम कृष्णाष्टक कृष्णकृपा कृष्णालय कृष्णार्पण कृष्णपदावली फड्डिं भोर्नु। नदींक गांवाक शाळेक कलालयाक.... खन्चखन्चाक कृष्ण नांव! दीनबन्धु गुणसिन्धु गोविन्दु, कृष्णवारिधि मुरारि श्रीहरि राधेघनश्यामालि काणि कीर्तन आयकूक मन्त्र उक्कम्बळेवनातिलो कोण ? सान चेर्डुवांक तें प्राण-जीव ! पुण सांगूकामू ! आयकूक तान व्हय म्हळ्यारि सांगूका कोणे ? म्हलगड्यानि समझून ग्रहण कोर्नु तैयार काणातीले साध्य ? दृश्य श्रव्य लिखित माध्यम आश्रयु आधारु। कृष्ण स्पर्शु नातिलि कला साहित्य शाखा खन्चि ? कृष्ण चरितामृत निस्रुनातिलि भास खन्चि ? देश विदेशान्तु मत पन्थ भेद सोणु वांत्रमय सर्वत्र प्रचार जत्ताचि आस। देवकी वसुदेवाले कारागृह सान्निध्यान्तु थाकून नन्दयशोदाले पावळेन्तु अद्‌भुत प्रयाण पूतनामोक्ष असुर निग्रह बाललीला लोणिये हाथलावण वन्नान विनोद गौपालन, ब्रह्म विस्मय, गोपिकांले निर्मम प्रेम प्रदर्शन काळियमर्दन गोवर्धनोधारण, कंसपीडान्त-वध, पाण्डव रक्षण द्रौपदिसंकटमोचन कुब्जेरि कटाक्ष, सुदामामैत्रि.... अवतारकालु पूरा अविस्मरणीय संभवानि केतवीला।

सातशीं श्लोकानि अर्जुन विषाद उन्मूलन, सासु श्लोकानि उद्धवाक वियोग सन्देश जगयात्रेक अत्युत्तम मनो विज्ञान-धर्म प्रबोधन । द्वापरान्तु मात्र न्हय सग युगान्तूयी

उपयुक्त दर्शन संहिता। परमोल्कृष्ट एक इतिहास महाभारत जल्यारि परम ज्ञान वैराग्य भक्ति रसप्रधान महाभारत। वाल्मीकि तुळसी कम्बर एषुत्तछन... महाप्रतिभेन्तुल्यान अमर रामचरित जल्यारि वेदव्यास सूरदास विनोबा चैतन्य महाप्रभु चेरुशेरि.... ज्ञान झरियेन्तुल्यान अनश्वर कृष्ण कथामृत प्रवाह। स्थूल सूक्ष्म सत्व तत्वाचें अमूल्य भण्डार। सत्यम परम धीमहि, सर्व भूतहितेरताः, योगः कर्मसु कौशलम्, संभवामि युगे युगे, योगक्षेमं वहाम्यहम्, धर्मु खंय जयु थंय, धर्मु राकतल्याक धर्मु रकीता... सुप्रधान सूत्रांचें संपुष्ट कोष। उद्धरणी निधि महाकृतियो। शाश्वत गुप्त सन्देश।

योगेश्वर श्रीकृष्ण परमात्मालो जगावतार शुभदीस आजी विश्वोत्सवु। अभिषेक, अलंकार, अर्चन, कीर्तन, नाम जपादिन्तुल्यान अन्तकरण शुद्धि सदुपदेशागीरण जत्तचि एवो। तन मन धन अर्पित सांस्कारिक सामूहिक कार्यक्रमान्तुल्यान सत्यदर्शन व्यक्त जावो। चन्द्रोदयाक क्षीरार्घ्य दित्तसणा मस्तक कमल प्रसुल्ल जावो। तीर्थ घेत्त सणा, पञ्चामृत पित्त सणा, नवनीत कर्गायता सणा, केळ्या बाळूक कुरकुरायता सणा, खीरि-पञ्चगदाई खत्त सणा असंख्य अपरूब निंवेद रांवदय स्वीकार्तासणा सन्मार्गदर्शन सद्भावना शान्ति मन्त्र पुष्टि पावों।

गोकुल वृन्दावन मथुरा द्वारका तद्वारा समस्त भारतखण्ड संपूर्ण जग-शरणागत भावान सामीप्य सारूप्य सालोक्य सायूज्य सर्वश्रेय कैवल्य प्राप्तीक वांवटेतल्याक, वाट दकैलेले सर्वान्तर्यामि श्रीकृष्ण परमात्माक साष्टांग शत कोटि वन्दनान स्वयं अर्पण कोर्या। ।। कृष्णम् वन्दे जगतगुरुम् ।।

चेर्डुवांक संख्या-पद

- के. अनन्त भट्ट, कोच्ची



एक, दोनि, तीनि आनी चारी।
चांग वस्त्र न्हेसका आंगारी।।1।।
पांच, स्ह, सात आनी आठ।
प्रती दिवस सिखका आमी पाठ।।2।।
णव, धा, इखरा आनी बारा।
होळेयाति मोगा गंगे धांरा।।3।।

तेरा, चौदा, पंद्रा आनी सोळा।
महादेवु गौरी शंकरु भोळा।।4।।
सत्रा, आठरा* एकुणीस आनी वीस।
देवा ! दी तूँ आनन्दाचे दीस।।5।।
संख्या-पद हें एक धोर्नु वीस।
एक म्हैन्याक आस्सति दीस तीस।।6।।

* आठरा - आषा

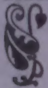


सुभाषित

माया जी.कम्मत
कोच्ची

**"माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा।।"**

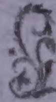
कोणकी अपण्याले चेर्डांक विद्याभ्यासु दीनायि, तीं आवसु आनि बपूसु ते चेर्डाली शत्रु तं। तशीचि तें चेर्डुं एक सभेरि हंसा मद्धे बैसले ढोंक समान शोभि जाव्ची ना।



कवितेची सरशी

- सूर्या अशोक, पळ्ळूर

मिजे अंतरंगांत एकि कवितेची सरशी
किरलेल्या पळोवनु संतोषाचे भरशी
उदास जालीं, आसा ती भो सानी
मिजे किरांगुळे बोटा येद्दी सानी
हांवें तिका सारें घालें
आनी उदाकय भरपूर घालें
तरीय ती हालना
वाडूचीं लक्षणां दाकयना
किरनिष्टि, व्हीरा कदि
मागीरीय उदाक शिंपलें मदीं मदीं
पुण ती सुकता दिसता
उदाक चड जावनु कुसल्या दिसता
माका वैराग्य आयले, मन जड जालें
तिका हुमाटून उडोंवका जालें
पळय ! तेन्ना तिजे मागशीं
निपून राबलेली आनी एक सरशी
पयलेलें सारें खावनु, उदाक पीवनु
घडियेन घडियेन वाडून आतां
मांचट जावनु राबल्या, फुलेल्या
आनी तीणे माका फळय दिल्यां.



असंभावित

- एन. बालकृष्ण मल्या, कोच्ची

कोण ना केदनाय लोकांत सुरक्षित
कालु हो धांवता एक ताळारि निश्चित
मरण सगटांक बरेयला सुनिश्चित
मनांत दवरल्यार तेंचि तुमकां उचित

उदाक पद्माचे पल्यारि असुरक्षीत
तशी मनीसाले जीवित अनिश्चित
जीवित व्हावंताय लोकांत, समयु हो किंचित
हांतु सुख मेळू जावूंका म्हणचें अनुचित

एकु दूसऱ्याक चोयता म्हूण अपरिचित
मेळताय वटेर, विधींत सुपरिचित
सोडून वताय, कळता वचें नियोजित
कालु हांतुं विधित वत्ता सुनियमित

जनन-मरण कालांत घूंवनु प्रवर्त्तित
चक्र तं घुंवता हे लोकांतु अनवरत
अमरु कोण हंगा? जावूक असंभावित
करू गेल्लेले आसा कोण आतां जीवित?

कोंकणी पदाचें अर्थांतु, गूढार्थ शब्द

विस्तरण परिचय : पारंपरीक वापरण — नागेष अण्वेकर, कारवार

दोळो	: नयन, काजुळे, तिगणि
दोळो धांपला	: मरण, विधिवष, अंत्य
दोळो सोडला	: स्थिति सुधारण, ज्ञानोदय
दोळे फुटला	: अलक्ष्य, अजागरुकता
दोळे गातला	: नदर घालप, आशाव्यक्त
दोळे बरला	: आनंद, सन्तोष
दोळे फुगला	: राग, ताप, शोक, दुःख
दोळे मारता	: भाव प्रकट, सूस्मसन्ने
दोळे चिम्टीता	: संज्ञाकरप, जाग्रता
दोळे उगडले	: विवेकमन, ज्ञानोदय
दोळे घुंवता	: आश्चर्य, अजब
दोळे बेतला	: अजागरुकता, अलक्ष्य
दोळे रगतना	: क्रूरि, वंचक, कठोरि
दोळे दिसना	: गमंडि, गर्व, दिमाक
दोळे पडला	: लक्ष्य गाल्ला, नदर
दोळेर आयला	: निद्रावष, श्रीमंतपण
दोळे सोडि	: कृपा, अनुगृहु
दोळे बिंग्रीला	: मंद दृष्टि, क्षीण
दोळे सुजला	: दुःख, शोकाश्रु
दोळे पोंडागेला	: नित्राण, अभल
दोळेक रिगला	: आकर्षण, नदर
दोळे जळता	: जाळ्कूट, काकदृष्टी
"	: असूया, मत्सर
दोळेक खोंचता	: मोहावष, आकर्षण
दोळे पलैले	: जाग्रता, आसक्ति
दोळो पुरला	: अजागरुकता
दोळे लासला	: अजागरुकता/अलक्ष्य
दोळे निफला	: भूगत, अदृश्य



2013 आगस्त -
हिन्दी राष्ट्रभाषा परिक्षेन्तु
प्रथम रॅांक मेळ्ळेली
कु. **अपर्णा पी.** (14)

कोच्चीचे प्रकाश जी. हेगडे अनि अनिता जी. हांगेली सुपुत्री। आदर्श हिन्दी विद्यालय, चेर्लाई, कोच्ची - 2 हांगा सिकता अस्स।







तमिळनाडु राज्याचे धावावें परिक्षेन्तु तृतीय रॅांक प्राप्त केल्लोलो कु. **राकेष प्रभु. एम.** चेंत्रै कोडमबाक्कम के. मणिकण्ट प्रभु अनि इन्दु प्रभु हांगेलो सुपुत्रु।

भगवद् भजन करतना त्रिकूट - म्हळ्यारि भक्ति, विरक्ति अनिक अनुभव प्राप्ति - ह्यों तिन्नीय बग एकसाणीच उत्पन्न जत्ता। — *सन्त एकनाथ*



चेरडाल मन्त्र

- काञ्चना बोस, तृपूणित्तुरा

आदित्यु पूर्वारी उद्देव्नु एत्ता।
आदित्य किरण धरतीरी पडता
फूल फुल्लेता, परिमळु एत्ता।
पक्षीयो किळबिळेव्नु उब्बूनु भोंवताय।।

निद्देल्ले चेरडूं ते उट्टाव्नु एत्ता।
उज्वल तोण्ड ते निरजूळ जत्ता।
आवसु बपूसु सोणु तीं वत्ताय।
आयाले हत्तान्तु सोंपूनु वत्ताय।।

भरलेले घर शून्य मु जत्ता।
निरजूळ मन्त्र ते रोड्डूक लगता।
मन्त्रान्तु संशयु उद्देव्नु एत्ता।
आवसूक मिज्जेरी कोपु की स्नेहु ?

यें नज्ज ते नज्ज नज्ज एसी-तसी।
यें कर्सी तें कर्सी वस्सी-एसी-तसी।
यें कडसी तें कडसी म्हणता एसी - तसी।
यें मिज्जे लगी ना कोणाक भक्ति।।

मन्त्राचो संशयु बड्डूनु एत्तात।
आदित्यु पश्चिम एव्नु निष्पता।
पक्षियो घूडान्तु एव्नु निद्देताय।
उजवाडु वोच्चूनु काळूकु एत्ता।।

निर्जुळ तोण्ड तें उज्वल जत्ता
आवसु बपूसु परतूनु एत्ताय,
हाथु भोरनु खेळूक, खंचाक हडताय।
मोगान चेर्डाक लगि अपेयताय।।

यें खा रे, तें पी रे, यें घे रे, धरी
येवयीं तेवयीं काणु तोणान्तु घल्ताय।
यो खेळु तो खेळु काणु खेळेयताय।
मोगु कोरनु चेरडाक आनन्दु दित्ताय।।

मन्त्राचो संशयु दूर तो वत्ता।
स्नेहु नंत्तना मिज्जेरी अवसूक ना मु।
आनन्दु जत्ता ते मन्त्र फुल्लेता।
आवसूचे स्नेहान्तु मग्न जाव्नु पडता।।

रिते आसले

- सुनील पालकार, नावशी, गोंय

तरणेपण आयिल्ले ते दीस रिते आसले
हांव मरून गेल्लों सगले जिते आसले

जीण रसाळ म्हूण आयकल्लें दुसर्यांकडसून
चोखून धवे जाल्ले हातांत काते आसले

निरकून फारकून पळेले आशी कुशीच्यांक
पळोवंक आरते दीस खेर परते आसले

दितना केन्ना पडलेंना सारकें पोशांत
जरी नात्यांतले मनीस कर्ते आसले

सरताल्यो राती फुडल्या दिसाचे यादीन
एकलो झुजतालों पळोवपी जायते आसले

माथें बरिल्लें मळबाचें नखेत्र घोंसानी
घेवपाक जमलेंना झोळयेक बेंथे आसले

नाटक गान (मुनिकुमारियो नृत्य करतायि।)

घोंगाय्लो घोंगो संसार्नाका भोंगो।
दोळ्याँ दिस्ता हात्तां मेळ्ना न्हंय म्हणु कोणी सांगो।।प।।
घोंघो महा जोरु घुंघु करता स्वरु।
कान-दोळे धांपुनु पळे इत्पुणि मनोहरु।।१।।
घोंगा हात्तांत्सुडियो। सोब्बारि कर्ता मोडियो।
बशिलकडचो आपण हालना भोंव्ता गुडियान्गुडियो।।२।।
मुगायेद्दें मात्तें मळपायेद्दें सात्तें।
पाय काय नाति गाँव भरी भोंवता चारमुर करता जोत्तें।।३।।
चोंवचाक गेल्यारि भोळो ब्रह्माण्ड करता गोळो।
सान परंतु आश्चर्य भारी काजळॉ पेक्षां काळो।।४।।
सासमा यद्दो दोळो केसा सपूर गळो।
कोटि सूर्य चन्द्र मोडोव्नु निडळारि केल्ला तीळो।।५।।
आंगाक नाना रंगु चोंवच्याक भारी चांगु !
चोय्ता चोय्ता मनांतेत्ता हाज्जोच्कोर्का संगु।।६।।
घोंग्या कोणकी भित्ता तो संसार कोरूक वत्ता।
घोंगो ताक्का सोणा लोळोव्नु लोळोव्नु
(चिर्डुनु - मुर्डुनु) खात्ता।।७।।
घोंगो म्हणचो शंभु सर्वे जगाचाबु।
शिवरामाक निमगुन पळे इत्याक बा विळंबु।।८।।

नाटक	- **"भक्त मार्कण्डेया"** 20-01-1968
स्थल	- को. ति. दे. हाई स्कूळ हॅाळ
संविधान	- एम. पुरुषोत्तम मल्या
अवतरण	- कोंकणी भाषा प्रचार सभा, कोच्ची
गानरचना	- दिवंगत शिवरामस्वामी
संगीत	- आकाशवाणी धारवाड केन्द्राच्या कृपेन
गायक	- के. सन्ध्याकुमारी आनी वी. मोहना बाई
रंगारि नर्तकियो	- एस. सुचरिता, एस. सुजाता।

New/Renewal of subscription of 'SPANDAN'

1 Year : Rs. 60/-
5 Yrs. : Rs. 300/-

1) By RTGS/ NEFT - Our A/c. No. 43072010010882 (IFSC Code SYN B0004307) with Syndicate Bank, Cherlai Br., Please inform us also by Postcard / Email.
2) If by DD/MO- favouring 'Kerala Konkani Academy' and send to Suresh A. Shenoy, X/1614, Maruthi Vihar, Amaravathy, Kochi - 682 001.

कोंकणी कार्यक्रम

दूरदर्शन-चन्दना

इंगलीश मासाचे
दुसरे अनि चौते आयताराचे
3.30 p.m. - 4.00 p.m.
पुनःप्रसार : मुकावेले शनिवाराचे
11.00 a.m. to 11.30 a.m.

आकाशवाणी

कोज़िकोड - मंगळाराचे
5.00 p.m. to 5.15 p.m.
तृशूर - मंगळाराचे
5.15 p.m. to 5.30 p.m.
धारवाड - सोमाराचे
9.30 p.m. to 10.00 p.m.
(जायी - जूर्यी कार्यक्रमु)

किणियालि काणि

- कुमारि. अञ्जली किणि, कोच्ची

उज्वाडाचो उत्सवु दीवाळीचो दीसु
दुष्टान कळ्ळो एक निर्दोषालो श्वासु।
सात - आठ पिळ्गी मगलान वच्चाय
किणियालीय रय्यालीय काणि ती आयकाय।।

अस्सिल्लो एकु ब्राह्मणु तो शिष्टु
देवरेशु तो व्हडु धर्मिष्टु
परोपकारान पुण्य भोर्नु मेळ्ळे
पूण कालान तग्गेलगि छल केल्ले।।

कोच्ची रय्यान, शक्तान, कर निंगीले
सारस्वत धर्मसंकटान्तु जल्ले
किणियान खंद्यारि कळ्ळो ह्यो भारु
रय्याले कत्रान्तु पवलो ह्यो विवरु।।

"गौड सारस्वत रबताय एकसणी
अस्स तन्तु श्रेष्टु देवरेश किणि।
पाण्ड्यशालेन्तु तक्का सिट्टाचो ब्यारु
कोंकण्यांक ताणे केल्लो उपकारु।।"

"सर्वालेय कर भोरूक तो जल्लो ?
कोंकण्याले हित कोरूक सरलो ?
अस्स तग्गेलगि धन जायते ?
फाय प्रथम दर्शन किणियाले मत्ते।।"

रय्यालि आज्ञा ती स्वीकारु केल्ली
नौका ती पाण्ड्यशाले भायर पवली
कालान कळ्ळो सायाह्नाचो वेषु
मेळ्ळो तंका कृष्ण किणि संगु देवरेशु।।

पाण्ड्यशालेन्तु सचिवु तो आयलो
किणियालगी इशि म्हणता तो जल्लो।
"उल्लोंव्चे अस्सा एक कयरि गुपीत
तुंचान जत्तले रय्याले हित।।"

किणियाले मन ते अति निर्मल
सचिवाले मनान्तु छल्चि छल।
दोग्गेय उल्लोंव्चाक कूडान्तु सरलिं
तवळी राज किंकर तीं पवलीं।।

सचिवान व्हड कपट केल्ले
किणियाले मत्ते ते घुंवण्डानु धर्ले।
किंकरान्तुले एकलान खण्डे ते कळ्ळे
किणियाले शरीराक शीर्ष ना जल्ले।।

तम्बीडे पट्यान्तु मत्ते मन्दून व्हेल्ले
हर्दूसा रय्याक प्रदर्शन केल्ले।
रय्यालि शक्ति केवल नव्वान वर्ली
दोनि उत्तर उल्लोव्नु चूकि निपयली।।

"दिक्कूका आस्सिले किणियाक जीवन्त
इत्या मुढा तुम्मि केल्ले तज्जे अन्त ?
किणियालें जीवान सोळ्ळे शरीर
पूण तग्गेली काणि ती जल्ली अमर।।"

5 - पुञ्च : पञ्चकोश (कोशपञ्चकं) :
अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश, आनन्दमय कोश





राणीची बाग

- फिलोमिना सॉंफ्रॉंसिस्को, मुंबय



एक आसलें चेर्डूं
ताचें नांव मिण्टू,
मिण्टूक व्हेलें भोवूंक
रस्त्यावयल्यान लागलें धांवूंक.

बायेन धरलो एक हात
आर्त्यान धरलो दुसरो हात,
अशे तरेन मिण्टूक व्हेलें
पळोवंक राणीची बाग.

जनवारांनी भरल्या राणीची बाग
होत्ती, घोडो, गेंडो, वाग,
वांशेल, माकोड, मेरवां साबार
मिण्टूचेर आयलो खोशेचो हुंवार.

मिण्टू सगळेंच खोशयेन भरलें
हेवटेन, तेवटेन धांवत सुटलें
सारखेंच बागाच्या पिंजर्याशीं पावलें
वागाक पळोवन अजापलें.

वाग खातालो मासाचो गूळो
खाता खाता धेंकोर घातलो
मिण्टूक दिसलें आपल्याक धेंगसो घातलो
बाबड्याचो जालो मोठोच घोटाळो.

खंयच्यान धांवचें समजना
कोणाक घट धरचें कळना,
आर्त्यान ताका उखलून धरलें
तेन्ना ताचें समाधान जालें.

मिण्टूक आयलो वागाचो राग
मिण्टून आनीक केलीना जाग
आईस्क्रीम खावन खोशी जावन
भींवून आयल्यांव राणीची बाग.

गोय आनी केरळ कोंकणींतलें अंतर

- एन. बालकृष्ण मल्या, कोच्ची

घोव/घरकार - बम्मूणु / दद्दूलो मनीषु
म्हजो - मेगेलो (मिगेलो)
नाकळत - कळूनत्तिल्लें
उरफाटें - उपराटें / अप्पर्तून
तापिल्लो/हून - तपल्लो / हूनु
पगार/वेतन - शंबोळु / वेतन
खेपो/पावटी (फावटी) - पावटी/ फन्तां
थंय (थंयय) - थंगा (थंगाय)
तसोच / तसलोच - तस्सलोचि
कादंबरी / नवलकथा -
नवलिका (नोवल)
अंगावलें/लुगट/पोशेग -
अवंगालें (अंगालें)/ लुग्गट
वावराडी - दन्देली / दन्दकार्नि
ल्हानपणांत - सान रूपान, सान प्रायेन
ताचें / तागेलें - तज्जें / तग्गेलें
सांतली / सत्री - सत्तूलि
सकल/ सकयल - खाल

आत्म धैर्य

- जी. पी. कामत, नोयडा

एक गावाँतु एकु बोक्कोडु आस्सिलो। सुमार 250 किलो जडाणि, काळे - देवे खाँप अंगारि, स्प्रिंग सरि घूवुनु अस्सिले सींग, व्होळ्ळें खाड। दोळे कुंकुमे वर्णु। एक घंटेय तगेले गळ्याक अस्स। एक दिवस खाण खत्ता खत्ता वाट विसोर्नु तो घोर वनांतु पंवतोलो जल्लो। लव-लवी तोण, पल्ले सघटेय देकूचाक तो स्थल चोव्नत्तिले, खाता रबिलो। वेळु सांज जल्लेलि तक्का कळ्ळेना। कष्टकालु म्होणु संगचे। धिडीर जावनु झोडु पावुसु अयलो। बोकडान चोवच्चानिक स्थल गुस्पले कार्य तक्का कळ्ळे। काळूकूय जल्लो तक्का परिभ्रान्ति जल्ली। देवा, खाणा आशेन हाँव खंत्तेय पवलो? रात्रीय जल्ली, पावुसु देकून शैत्यय सहिजायना। अत्त कस्सेलें कोर्चे ? ये शैत्यांतु थकूनु रक्षेकय रात्रि नीद काडूकय एक स्थायु जांवका। अस्सि विचारु कोर्नु तो मुक्कारि चंवकीलो। स्वल्प दूरा वचाक एक गुह ताणे दिकिले। कांय पुणि विचारु कोर्नत्तिले तो तन्तु चोणु निद्देलो। सूर्योदय जत्ता। ते गुहान्तु वासु कोर्चो सिंह थंगा पवलो। फुडे दिस्सा खाण सोदून गेलोलो तो सूर्योदयाक वापस अयलात्।

गुहा लगि एत्तणा तक्का अन्य मृगाचि घाणी मेळ्ळि। तगेले वासस्थलारि विंगड कोणकी अस्स म्होणु तक्का कळ्ळे। ये तक्का सहिजायना। अतीव क्रोध जावनु तो गर्जेलो। "कोण रे मेगेले घरांतु ? कस्सेले धैर्यान तूं हंगा चोणु रबीला ? भायर यो।" ये गर्जन अयकतना बोकोडु जाग जालो। सिंहालि घाणी तक्कायि मेळ्ळी। प्राण भयान तो कडकडेलो। तवळि गोवंटे घांट वज्जली। यो शब्द सिंह प्रथम जावनु अयकता। ते जल्ले खत्तीरि तक्कायि स्वल्प भीति जल्ली। सिंहान एक लगेन गर्जूनु संगीले "भित्तरि कोण ? भायर यो वोगी।" ये अयकतना स्वल्प निमिषाक बोक्कोडु भयाक्रान्तु जल्लो। जल्यारीय धिडीर जाव्नु तक्का एक उपाय मन्नान्तु अयलो। इत्तें जल्यारीय मरण निश्चित। धैर्य समेत मरण प्राप्त जवुचेंचि उत्तम। ये लेकून धैर्य संभाल्नु तो निंवगीतलो जल्लो। "भायर कोण म्होणु प्रथम सांग। हांव मगीरि मेगेलि जाणकारी दित्ता।" ये संगून ताणे तगेले बोड हल्लेयले। तवळी घंटे शब्दु जल्लो। यो अपरिचित शब्दूय, भायर कोण म्होणु निंवगपय अयकतना सिंहाले मन्नान्तु स्वल्प भीति जल्ली। जल्यारीयि स्वाभाविक जाव्नु अस्सिले कोप्पान तो गर्जेतोलो जल्लो। "हॉव ये वनांतुलो रायु सिंहु त। तू वोगी भायर यो।" जल्यारि ये गर्जनान्तु भीती





अस्स, गाँभीर्य ना म्होणु बोकडा मन्नांतु जल्ले। तगेले आत्मधैर्य संभालनु तो संगतोलो जल्लो। "तू सिंहु, जल्यार हाँव 'भंप्पू' त। हाँव रन्नांतुले रायाक कोणाक लेकिना। हाँव भायर एत्ता।" म्होणु संगिल्ले गुहा तोण्डारि एव्नु मुक्कावेले पाय दोन्नीय उब्बार्नु, बोडय हलोव्नु दोनि उडकि मर्ली। बोकडाले वर्णु, सींग, खाड अनि तंबिडे दोळे दीकतना अनि घांटे शब्दूय अयकतना सिंहु भीव्नु गेल्लो। अत्त पर्यान्त ताणे एसले एक जीवाक देकने। अस्सोलो शब्दूय अयकने। यो कस्सेलो विचित्र जीवु ? एस्सी लेक्कून भयाक्रान्तु जाव्नु थंगा थकूनु धाव्नु गेल्लो। बोकोडु कौतुकान चोयता रबीलो। ताणे हसताणा घंटे नादु जल्लो। ये अयकतना सिंहु वेगान धाव्नु वोत्तोलो जल्लो। धाव्नु वच्चे मार्ग मध्ये एकु कोल्लो सिंहु भयान धाव्नु वत्ता दिकून सिंहालगी वोचून निवंगिता। "हे राया, तुम्ही कसल्याक धावंताय ? तुम्गेले तोण्डारी भीती कसल्याक ? कार्य इत्ते म्होणु साँग ? निवर्त्ति कोर्यात।" ये आश्वासन वचन अयकून सिंहान तगेले भीती कारण संगीले। ये अयकतना कोल्लो हस्सून पोळ्ळो। हे राया ! तुक्का उत्तली बुद्धि ना जल्लि वे ? तुम्चाकय बलवन्त जीवु ये सृष्टीन्तु ना। मगीरी यो 'भंप्पु' कोण ? अस्सि एक जन्तु भूमीचेरि अस्सिलो जाव्नु अत्त पर्यन्त मक्का कळनेय। तुम्का कस्सलकी विभ्रांति त। हाँव तुझेलगि एत्तां। यो ते कोस्सोलो जीवु म्होणु अंका चोंवयाँ। ये अयकतना सिंहान संगीले। "अरे कोल्ल्या, हाँवेय प्रथम जाव्नु त ये प्राणियाक देकता। भयानक रूप मात्रं न्हय कन्नाक भेदु कोर्चो एक प्रत्येक शब्दूय तो कर्ता। मक्का मारूक जाव्नु उडकी मारनु अयलो। हाँव कस्सिकी प्राणूय घेव्नु रक्षा प्राप्त जल्ला। मगिरी तुझे ओट्टु हाँव एना। तूं महां कौशलकारि त। मक्का तज्जे मुक्कारि घाल्नु तु धाव्नु वोत्तोलो। तुझेरी विश्वासु कोरूक जायना मक्का। हाँव वत्तां।" जल्यारिय कोल्लो सिंहाक सोणेचि। "रय्या, 'भंप्पु' म्होणु एक जन्तु ना, खण्डित। मिझेरि विश्वासु घे। हाँवे सुमार जाणाक फटयलोलो असूयात। जल्यारि तुझे लगी फटवण आजि पर्यान हाँवे केलीना। अनीकयि तुक्का मिझेरि विश्वासु ना जाल्यारि एक करी। मेगेले बाल तुगेले बल्लाक बन्धून घे। हाँव सोणु वचिना नवें?" कोल्यालि यी युक्ति सिंहाक स्वीकार्य जल्ली। ताणे व्होगी कोल्याले बाल तगेले बल्लाक बंधून घेत्तेले। अनि दोगय गुहाकडे चंकतले जल्ले।

गुहा मुकारि एत्तणा कोल्याले प्रेरणेन सिंहु गर्जेलो। "अरे 'भंप्पु' तुक्का धैर्य अस्स



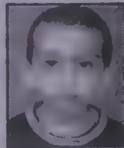
जल्यारि भायर यो। भीत्तरी निप्पूका नका।" बोकडान सिंहा ओट्टु कोल्याक देकुचानिक भीति चळ्ळी। अपण्याले मरण तीर्च्चे त म्होणु ताणे लेकीले। जल्यारीय ताणे आत्मधैर्य सोळेना। मरण जल्यारीय धैर्य समेत शत्रु लगि जूझूनु वीर मृत्यु पवलारि मोक्षु प्राप्त जत्ता। एस्सि लेकून ताणे तगेली सर्व शक्तीय काणु उग्ररूपान गुहा भायर येवून उडकि मर्ली। उडकि मरतना घंटेय वजली। बोकडालि उडकीय घंटे शब्दूय अयकुचानिक सिंहु प्राणा भीतीन धंवचाक लगलो। बल्लाक पळ्ळोलो कोल्लो उल्दून संगतोलो जल्लो। "अरे तूं इत्या धांवता? राब, राब। ते एक साधारण प्राणि म्होणु मक्का दिसता।" जल्यारि प्राणभीतीन धंवचे सिंहु ये काँय अयकूनत्तीलें वेगान धावू लगोलो। बल्लाक बंधिलो कोल्लो वट्टेवेले पथराचेरीय, रुक्काचेरीय धडवून बोब मरतोलो जल्लो। 'भंप्पु' कोल्याक मरता म्होणु लेकून सिंहान धावाँ वेगु चडेयिलो। बल्लाक बंधिलो कोल्लो टेन्नीस बोळासरी खलाकय, उंचारीय वट्टेवेले पथराचेरीय, पार्याचेरीय धडवून मरण प्राप्त जल्लो। कोल्यालो शब्दु अयकना इत्याक म्होणु सिंहान मगल्यान घूवनु चोवंचाक कोल्लो मरण प्राप्त जाव्नु बल्ला लंबून अस्स। सिंहान कस्सलें मना केल्ले म्हळ्यारी भंप्पून कोल्याक मारनु घेत्तला म्होणु। ताणे मन्नांतु आश्वासन केल्ले इति म्हळ्यारि कोल्लो मेगेलें बल्लाक अस्सिले चांग जल्ले। ना जल्यारि भंप्पु मक्का मारनु घलतोलो अस्सिलो। मेगेलें मरण निश्चित जत्तालें। अस्सि लेकून सिंहान बल्ला बंधिले कोल्याक सोडवाट कोर्नु दूरा उडोव्नु प्राणु मेळ्ळेले आश्वासान खाण सोड्डून चंकीलो। बोक्कोडु उजवाडु जवचानीक मरणा मुखा थकूनु जीव मेळ्ळेले संतोषान तगेले गावाँतूय चंकीलो। ✤

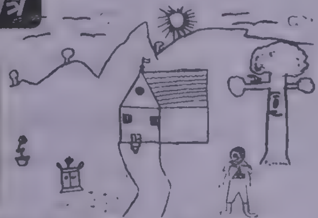
बाल गीत पित्री बाबु

- भक्ता आर. कात्रंगाड

पित्री बाबु एकु
ओणती धरनु राबलो
हळु चमकू गेल्लो
पाय्या पायु लागलो
बाबु खाल्ला पळ्ळो
दुकून रडू बसलो।

चेर्डुवांलि चित्रँ





कु. लक्ष्मीप्रसाद प्रभु (9) - कोच्ची।
माया अनि सन्तोष जी. प्रभु हांगेलो सुपुत्रु।

इन्द्रिय विषय - ഇന്ദ്രിയ വിഷയങ്ങൾ - Sense Objects - शैलेष कम्मत एम., कोच्ची

तंबिडसाणि- ചുവപ്പുനിറം -Red Colour
धवसाणि- വെള്ള നിറം -Whiteness
पच्चूव्साणि- പച്ച നിറം -Green Colour
हळ्दूवसाणि- മഞ്ഞ നിറം -Yellow Colour
निळबाणि/निळसाणि- നീലിമ -Blue Colour
कळबाणि/कळसाणि- കറുപ്പു നിറം - Blackness
गोर्बाणि/गोर्साणि -വെളുപ്പ് - Fair Complexion
तोर्टाणि- ചവർപ്പ് -Astrigency
अंब्साणि- പുളിപ്പ് -Sourness
मिट्साणि- ഉപ്പുരസം -Saltiness
कोडवाणि- കയ്പുരസം -bitterness
गोड्साणि- മധുരം -Sweetness
तिक्साणि/तिक्टानि- എരിവ് -Pungent
हर्वण्टाणि/हर्वटाणि/हर्वटसाणि - പച്ചചുവ - Taste of raw vegetable
कोळ्बुंटाणि- ക്ലാവിന്റെ ചുവ - Taste of Verdigris
पच्चूटाणि- പച്ച ചുവ -Smell/Taste of Greens
जिवसाणि- സജീവാവസ്ഥ -Liveliness
नव्साणि- പുതുമ -Freshness
हुन्साणि - ചൂട് -Heat
हुल्पटाणि -എരിച്ചിൽ -Burning Sensation
निब्बर्साणि- കട്ടിയായ-Hardness, Harshness
थरथरसाणि- വഴുക്കൽ -Slippery
बावटसाणि- വാട്ടം -Withered state
झर्वटाणि- ഉരസൽ - injury caused by friction

जॅडाणि- ഭാരം -Weight
मोव्साणि- മൃദുലത -Softness
वोल्लटसाणि (वोल्साणि)- നനവ്-Dampness
दट्साणि- കട്ടി -Thickness
वंकूडसाणि- വളവ് -Curvature
पतॅलावणि- പരത്തൽ -Extension
ल्होव्साणि- കനക്കുറവ് -Lightness
फवराणि- പൊലിപ്പ് - Increase
घाणि- ദുർഗന്ധം - Bad smell
धुवर्टाणि- പുക മണം -Smell of Smoke
भत्साणि- പൂപ്പുമണം -Musty Smell
बुर्साणि- വളിച്ച മണം - Stink of spoiled eatables
बेळ्साणि- വളിപ്പ് -Staleness
पोर्टाणि- ഉളുമ്പു മണം -Fish smell
कुस्सडसाणि- ചീഞ്ഞത് -Stench
केण्डसाणि /केण्डाणि -കെട്ട മണം - Smell of spoilt oil seeds
कर्पटाणि / कर्पटसाणि -കരിഞ്ഞ മണം - Smell of burnt eatables
धर्वटाणि/ दर्वटाणि/ धर्वटसाणि - കരിമരുന്നിന്റെ മണം - Smell of Gun powder
खवंटाणि- കാറൽ - Rancid smell
खिसाणि- മുശുക്കുമണം - Bad Smell
खर्साणि- ക്ഷാരഗന്ധം - Smell of Urine
वंकाण्सणि- പ്രശംസ -Praise

औषद पंक्ति - 20

अज्जेलीं वोक्कदां (मुत्तशिश वैद्यं)

सुशीला टी. भट्, कोच्ची

पोट सड्डळ जावनु हग्गपः- बालकांकय, म्हलगड्यांकय एक्कच लेकान बाधक जवंचो रोगु तां यो. प्रत्येक रूपान पावस कालाक सांक्रमिक रीतीन एंवचो रोगु लागेन तां. ह्या बगेक जायते उपचार फूडे जनां करतालीं.

1) अंबूस ताक्कांतु अल्या रोस्सु अनीक मीट घालनु रोगीक ताव-तावळी जावनु पिंवचाक दीवप.

2) अंबूस तक्काची क्डी - करबेवु, सस्सम, जीरें, सुंटींची पुड्डी इत्यादी फण्ण घालनु तैयार कोरचें ताक - पिंवचाकय, पेज्जेरी रक्कोवनु जेवंचाकय दीवप.

3) वोंकीक दिवंचाक सांगिल्ले लेक्कान पेंयदार भज्जिल्लें उद्दाक, ल्हाये उद्दाक दीवयात.

4) कुव्यां पिटियेंचे (कुव्वप्पोडी) फुटची निश्शें कोरनु, तांतु पेंयदार अनीक एळा पुड्डी घालनु घडियेन-घडियेन पीवोवयात. (एक खोल्लो उदकाक एक चिपट कुव्यां पिट्टी म्हळेले लेक्कान काडून, ती उदकान्तु खीरोवनु, गाळनु खोत-खोतो कड्तरी तें निश्शें जत्तलें)

5) बेल्ला रुक्का मूळ (कूव्वळं) धूवनु, धड्डावनु उदकांत घालनु खोत-खोतो काडून रोग्याक पीवोवयात.

6) वोंकीक सांगिल्ले लेक्कान शियळ्या उद्दाक पेंयदार, एळु घालनु दीवयात.

7) नोणचो अंबो जावो अंबूली जावो पेज्जेचे निश्शांतु पीळनु तें पीवोवयात.

8) नोणचे अंब्या पारीचें भित्तरचो भागु अनीक एक-दोन चिमटी वोवों चांग कोरनु वट्टून (धड्डावनूय लनची कोरयात) फडचनांतु दवोर्नु बन्दून (फडचान ना जल्यार केळीचे जीवे पान काडयात) रन्नींतु - इंगळ्यांतु घालनु मुंबरावनु नीवनु जत्तरी तें खावोवयात.

अजीर्णान तां सड्डळ हग्गप जाल्यारी करबा देंटु, सूंटी, अमृतवाली ये तिन्नीय कोरनु कषायु घालनु, इन्दुप (पत्थरा मीट) मिश्र कोरनु दोन-तीन खोल्ले पिल्यार पूरो. (एक मूठ करबा देंटु, एक मूठ अमृतवाली कुटके, एक व्होडु कुटको सूंटी. यें तिन्नीय धड्डावनु स खोल्ले उदकांत घालनु खोत-खोतावनु अर्ध कोरनु जल्यार कषायु तैयार.) रित्ते पोटारीय, निद्देवंचाक वच्चे मुरथमची जावनूय पिल्यारी फल चढ.

9) अष्ट-चूर्ण अंबूस तक्कान्तु घालनूय पीवोवयात.

10) निंबूव्या रोस्सु, अल्या रोस्सु, मीट कोरनु दीवयात.

रसपति - आर. के. प्रकाश, पळ्ळूर



Dr. P. N. N. सिंह
डॉ. प्रश्नु ना नरसिंह
SSLC, PDC, BSc.,
MBBS (3 times)

बंग्रा दन्ता रमेशु : डॉक्टर, मका चांग वायु कोपु। वखद इत्तेंय ?
डॉक्टर - प्रश्नु ना, पांच दिसांक वखद खावनु, मारुती मन्त्रु जपूका। पुत्ताक उळदिल्यारि बप्पाक शमन जत्तलें।

* * * *

चाळीस दन्ता सुरेशु : डॉक्टर, हासूचे वेळार कणसळान्तु काचकूल सरी।
डॉक्टर - प्रश्नु ना, वखद दीन। जातेर कचकूले स्थानार खोर्जुकूल लायलार पूरो।

केरळ-कर्नाटक कोंकणी

- गुरुदत्त एस. प्रभु, कोच्ची

गोरकोष्ट - गोडकोष्ट
परणि म्हण्णी - हुम्माणें
अंग लावण्य - अंगलोटु
विश्वासी - नम्गातोलो
चक्कूलि - चकलि
प्रयासु - बेझारु
तीनि दुढवाक (प्रयोजनु ना) -
तीन कासाक (प्रयोजनु ना)



आळें (കടങ്കഥ / Riddles)

- के. पुरुषोत्तम पै, कोच्ची



आफीस न्हय तें आफीस
होटल न्हय तें होटल।
आदित्यान एंवचे फुडेय
समुद्रान्तोवय बुडलेरीयि।
कागत पेनसिल नत्तिलेंचि
काम थंगा चमकून आसा।
एंवचे सर्वांक तन्रेक, बुक्केक
जांवका जाल्लेलें मेळता आसा
इत्तें म्हणु संगाय तुम्मी
बुध्येन चिन्ता कोरनु।।

वस्सरी

परणी म्हण्णी



- श्रीदेवी सुरेश प्रभु, कोच्ची

- दुड्डु दव्वरि बन्दून
  तो वत्ता सूंटूनु।
- दुड्डु सग्ग वट्टेक व्हरता
  स्वर्गा वाट चुकता।
- दुड्वा मस्ति दक्कोवप
  दुसराले मत्र दुक्कोवप।
- दुड्वाकारान (दुड्डु अस्सिल्यान)
  लेकीलारि इत्तेंय जत्ता म्होणु वे?
- दुड्डु कोर्नु दवोर्यात,
  खंवचो योगु देवानच दींव्का।

शिवकर्णे

बायलाँ खातिर (ददल्यांकय) - पद्मजा कम्मत, दिल्ली

सामग्री

1. तवस्सें/ मोग्यामीडि	-	200 ग्रां	6. चिंचाब	-	2 ग्रां
2. जीवि मिरसांग	-	3	7. तेल	-	3 चिपट
3. अल्लें	-	5 ग्रां	8. करबेवा पत्ती	-	2 देंटु
4. ससम	-	½ चिपट	9. मीट	-	आवश्याक
5. जीरें	-	½ चिपट			

तवस्सें / मोग्यामीडि सालि तस्सून बेडुप्प कोर्नु कोचावनु सोपूर कोच्चोलु कोर्का। अल्लें अनि मिरसांगय कोच्चोलु कोर्नु तन्तु मेळोवुंका। मीट आवश्याक अनुसृत घालनु चिंचांबा उदकान्तु कोच्चोलु घाल्नु चांग प्रमाणि मेळोंवका।

नन्तर, तेल तप्पोव्नु ससम, जीरें, करबेवापत्ती समेत फण कोर्नु तन्तु मेळोंवका। शिवकर्णे तय्यार। 

केरळचे बरोवप्याँ लगी

केरळ कोंकणी अकादमी प्रतिवर्ष "पंडरिनाथ भुवनेन्द्र पुरस्कार" दीव्नु एत्तायि। २०१३ चे पुरस्काराक लघु गद्य कृती पेटोव्नु दिंव्याक अपेक्षा करताय।

- केरळचे बरोवप्याँक तँ यें गद्य सर्त।
- काणी, नाटक, प्रबन्ध, यात्रा विवरण - इत्यादि २० पन्ना पसी (20 Full scap papers) चड जंव्या नज्ज।
- पन्नाचे एक भागान मात्र बोरोंव्का।
- बरोवप्यालें नाँव, पत्तो आदी वेगळेचि पन्नार बोरोंव्नु कृती लगि दवोर्का।
- कृती मेळका जल्लेली अंतिम तारिक - २०१३ नवंबर ३०.
- कृती देवनागरीन जांव्का बोरोंव्याक।
- पेटोव्नु दींव्का जल्लोलो पत्तो - श्री जी. मोहन रावु, सन्केतं, IX/ 1110 B, अजन्ता लेन, कोच्ची - २.

संगीत स्वर माधुरि - २१



आर. मोहन कम्मत, कोच्ची

7) एक ताळ (4 मात्रा)

×	1	2	3
स	रि	ग	म
रि	ग	म	प
ग	म	प	ध
म	प	ध	नि
प	ध	नि	स
स	नि	ध	प
नि	ध	प	म
ध	प	म	ग
प	म	ग	रि
म	ग	रि	स

भक्ति गानामृतं

- के. शान्ता बाई, कोच्ची

नरसिंह देवा ! अम्मि कर्ताय सेवा
अम्का दींव्का शक्ति ! अम्मि कर्ताय स्तुति
नरहरि रूप घेव्नु, हिरण्याक नाशु कोर्नु
प्रह्लादाक मोक्षु दीव्नु भोर्लो म्हू तू भूलोकान्तु
नारायण नारायण नित्यस्तुति कर्ताय अम्मि
अम्गेले मन्त्रान्तु सर्वय तुगेले रूप देवा नित्य
भक्तीन अम्मि एत्ताय, नडार कीर्तन कर्ताय
दकैय तुझे रूप, मुक्ति पांव्लाय भक्त
नरसिंह मूर्ति तुगेली ती कीर्ति
सर्व जनांक मुक्ति दींव्का देवा तृप्ति।

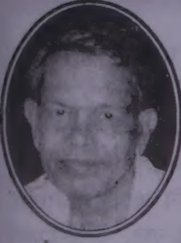
✱

लोक काणि

व्हिन्दूलो

- ए. आर. प्रभु, कोच्ची

व्हिन्दूळ्यान केदनाय तळ्या पडीक त मोट्टे घालप। तस्सी एक व्हिन्दूळ्यान एक तळ्या पडीक मोट्टे घल्ले। पावसु एंव्चानीक मोट्टे तळ्यांतु गेल्ले। व्हिन्दूळ्यान वोळ्या संकडान पडीक बेस्सूनु रडूक आरंभीले। त्या वट्टेन वच्चे एक म्हारान दिक्किले। ताणे व्हिन्दूळ्या लागी निंव्गीले, तू इत्या रडता? व्हिन्दूळ्यान संगीले मेगेले मोट्टे ह्या तळ्यान्तु गेल्ले। तूँ काणु दित्तवे ? 'मक्का जव्ना' म्हुण संगून म्हारु गेल्लो। तज्जे मगल्यान एक अच्चारि एयलो। व्हिन्दूळ्यान तज्जे लगि निंव्गीले। ताणेयि तक्का जवना म्हुण संगिले। तजे मगल्यान एकि हस्ति एयली। तिजे लगियि व्हिन्दूळ्यान मोट्टे काणु दिस्सिवे? म्हुण निंव्गीले। तीणेयि जवना म्हणु संगिले। मगिरि त्या वट्टेन एकि वागमूंयि एयलि। व्हिन्दूळ्यान तिजे लगियि निंव्गीले। मूंयि संगता "ओ हो हांव काणु दीन।" यें संगूनु मूंयि हस्ति सोंडाळेर चव्ळि। हस्ति धावनु अच्चार्या लगि गेल्लि। अच्चार्यान खोरयाक दण्डो घालनु दिल्लो। म्हारान तळ्यान्तु देव्नु व्हिन्दूळ्याले मोट्टे काणु दिल्ले। हन्तु थकून अम्मि सिकूचे इत्ति म्हळ्यारि "सन्नांकय व्होळ्ळिं कयरिं कोरुक जत्तले।"



अनन्त त्रिविक्रम भट्ट

- पी. मनोहर, कोच्ची

अनन्त त्रिविक्रम भट्ट म्हळ्ळेले ए. टी. भट्ट हान्नि 1929 अक्तूबर 27 सावे तारिखेक, ब्रिटीश सरकाराले आफीसांत कर्मचारी जावनु आसिल्ले दामोदर अनन्त भट्टालोय सरस्वती बायीलोय पूत जावनु कोच्चीन्तु जन्मु घेत्तोलो.

प्राथमिक, हाई स्कूळ विद्याभ्यासु कोच्चीचे टि. डी. हाईस्कूळांतु. 1944-45 कालाक स्कूळांतु सर्व प्रथम जावनु (एस. एस. एल. सी) धावें पास जाले. इन्टरमीडियट एरणाकुळमाचे महाराजास कोळेजांतु थाकूनुय, बी.कोम. परीक्षा तेवरेचे सेक्रड हार्ट कोळेजांतु थाकूनुय प्रथम श्रेणीर पास जाले. भारतीय संस्कृत प्रतिष्टानान चमकोंवची कोविद परीक्षाय प्रथम श्रेणीर पास जाले. # एक वर्षाक लागीं कोट्टयच्चे एक स्वकार्य कंपनीन्तु काम केलें. 1951 वर्षा कोच्चींतूच प्रवर्तन करताले नाषनल एन्ड ग्रिन्डलेयस बैंकान्तु क्लेरिकल स्टाफ जावनु भर्ती जाले. 1987 अक्तूबरांत बैंकाचे कामांत थाकून आफिसराचे स्थानारी निवृत जाले. उद्योगारि प्रवेश केल्लेले एद्दे वर्षा भित्तर बैंकानी चमकोवची C.A.I.I.B. परीक्षा सर्वप्रथम श्रेणीर उतीर्ण जावनु दोन भंगरा पतक प्राप्त केलीं. # 1970 वर्षा वैप्पिनकरेचे कुषुपिळ्ळीचे गोविन्द शेणै-राधा बायी दंपतीली धूव शुशीलाय जावनु व्हर्डीक चमकीली. दोग जाण्यो धुव्वो.

आत्मीय, पौराणिक जावनु आसिल्ली अनेक लेखनां कोंकणीत बरवप, जयते गावांत, जायते योगांत कोंकणीन प्रभाषण दीवप सग्ग करताले. ग्राम सभा प्रवर्तना कालाक सम्मेळनांतु, क्यांपान्तु सग्ग भाषण दीवप आस्सिल्लें. 'षोडश संस्कार', 'अमगेले पुण्य पर्व', 'भारतांतूलीं तीर्थ स्थान' इत्यादी विषयांचेर वेंकटवाणी, ग्रामसभा स्मरणिका हंचेरी सग्ग लेखना बरयल्यांय. कोच्ची तिरुमल देवस्थानान्तु 1980 थाकूनु चार-पांच वर्षांक (शनिवार, आयतार) 'रामचरित मानस' वाचूनु सरळ कोंकणीन्तु अर्थ सांगप आसीलें.

तंगेले प्रत्येक जावनु संगुक जल्लोलो गुणु इत्तें म्हळ्यार, बायलेले (सुशीला टी. भट्ट) कोंकणी प्रवर्तनाक प्रोत्साहन दिल्ले म्हळेले त. तिगेले हरिकथा, नाटक रचना - अवतरण, गीन्त इत्यादी प्रवर्तनांक फटिबल दिल्ले मात्र न्हय नाटकाचे सग रिहर्सल घरकडे कोरोंव्वाक विमुख जाल्नु रब्बीले ना म्होणुय त. (भारि समय - धन खर्चु अस्सिलीं कार्य - एक दोनी दिस्साक न्हय नवें). 1998 मेय 31 तारिखेक स्वर्गवासी जाले.

विधि
कोणाक बदल्सूक जता ?

- गोश्रीपुरं हरिकुमार

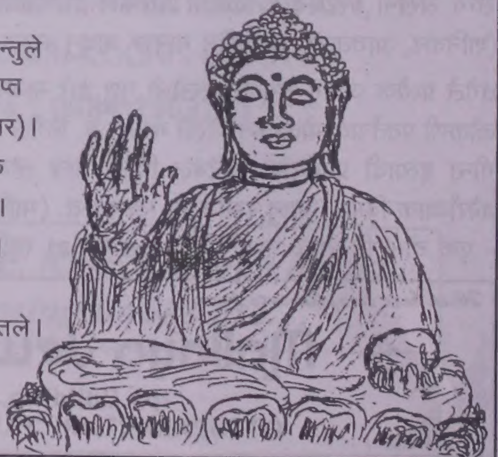
गौतम बुद्ध, सिद्धार्थ गौतम, शाक्यमुनि, तथागता - ये नावान सग जाण जंव्चो बुद्ध, विष्णूले दशावतारान्तुले 9 वें अवतारु। जनन 563 BC वैशाख पुन्नवेक कपिलवस्तून्तुले 'लुम्बिनी' म्हळेलेकडे राजकुटुंबान्तु। बप्पूसु शुद्धोदन रायु अनि आवसु महामाया राणी। सिद्धार्थाक सकल तराचे सुख दीव्नु वड्डेय्लो। कष्ट-नष्ट, दुःख-दुक्की कांयि कळेय्ले ना। 16 वर्षारीच व्हर्डीक करेय्ली। बाय्ल यशोधरा। चेर्डु जल्लें - राहुल। खंचाचोय उणावु दकेय्लो ना....सुख भोग मात्र...जल्यार.....।





जल्यार 29 वर्ष म्हणतना एक दिवसु..... बप्सूक कोळोव्नत्तिले लोकु पोळोव्चाक देवलो। पळेय्लें दीन-दुःखी रोगींक, म्हन्तारांक, मोडे व्होर्चे .... मन्न बदल्सले। लगी दिस्साचि रौळार, कुटुम्ब सग सोणु देवलो ..... सन्यासी जाव्नु। भिक्षु जल्लो। तपस कोरूक लगलो। ....

मगीरि 35 वर्ष प्रायेरि बोध गयेन्तुले पिंपळा रुक्का पोन्दाक ज्ञान प्राप्त जल्लें (49 दिस्साचे ध्याना नन्तर)। बुद्धु जल्लो। धर्मु प्रचारु कोरूक लागलो। लोक विख्यात जल्लो। अत्तयँ कीर्तीक काँय उणावु ना। 80 वर्ष प्रायेर (483 BC) 'कुशीनरा' दवोर्नु परिनिर्वाण घेतले।



> मनुष्यु एक लेकीता।
> देवु अनियेकचि।।

Reg. No. KERKON/2012/45527 **SPANDAN** Registered - No. EKM/732/2012-14
Vol. No. 2 Issue No. 10
Published by : KERALA KONKANI ACADEMY, KOCHI
10th October 2013
Rs.15/-

Printed and published by Suresh A. Shenoi on behalf of Kerala Konkani Academy and
Printed at M/s. Prakash Process, Srinivasa Mallan Road, Ernakulam, Kochi - 682 035, Ph : 2350960 and
Published at 8/28, Santheri,1st Floor,Opp. M.S.C. Bank Ltd., Cherlai Road, Kochi - 682002. Editor - Suresh A. Shenoi